अयो

* श्री वीतरागाय नमः *

योध्या का इतिहास।

लेखक व प्रकाशक

जेष्ठाराम दलसुखराम मुनीम

न श्वेताम्बर मन्दिर अयोध्या

जि० फैजाबाद (यु० पी०)

कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
महावीर जैन आराधना केन्द्र
(गांधीनगर) पि ३८२००९

विक्रम संवत् १९९४ } मूल्य ।)
जैन संवत् २४६५ }

* श्री वीतरागाय नमः *

अयोध्या का इतिहास।

लेखक व प्रकाशक

पण्डित जेष्ठाराम दलसुखराम मुनीम

श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर अयोध्या

जि० फैजाबाद (यु० पी०)

प्रति—१००० { विक्रम संवत् १९९४ / जैन संवत् २४६५ } मूल्य ।)

मुद्रक—
पं० कालीशरण त्रिपाठी, साहित्यरत्न
कमला प्रेस, अयोध्या।

❀ प्रस्तावना ❀

संसार की सर्व- प्रधान और पुरातनी राष्ट्रभाषा संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ पढने से निःसङ्कोच कहा जा सकता है कि जैनधर्म वहुत पुराना है। यद्यपि सनातन-धर्मके ग्रन्थोंके अनुसार यह नास्तिक- धर्म माना जाता है किन्तु मूर्तिपूजा इसका आस्तिक्य द्योतित करती है। भलेही उसका ध्येय कुछ और हो। यही कारण है कि जैनसम्प्रदायावलम्वी आज हिन्दुओं में परिगणित होते हैं।

हमारा विश्वास है कि किसी समुदाय की उन्नति का कारण उसकी आभ्यन्तरिक सत्यता अवश्य है, भले ही वह आकर्षक वस्तुओं से आच्छन्न होकर उसकी आकर्षण- शक्ति को द्विगुणित कर रही हो, क्योंकि अन्तः समाकर्षणके विना विशिष्ट- समुदाय समुदायान्तर मे सद्यः सन्निविष्ट नहीं होता जैन इतिहास के पढ़ने और मनन करने से बोध होता है कि उसे स्वल्पबुद्धियों ने ही न अपनाया था अपि तु अनल्पमेधाओं ने भी। यद्यपि वलसे अधिक स्थानका प्राधान्य माना गया है त। भी चिरकालतक सत्पात्रमे रहने वाले पदार्थ में भी स्थैर्य- शक्ति का आधिक्य होनी चाहिये।

यह सगर्व कहना पड़ेगा कि अयोध्या अनेक आविष्कारों की भूमि है। यदि चक्रवर्ती सम्राट् सबसे पहिले प्रादुर्भाव अयोध्या मे होता है तो भारतके लिये नवीननियमों का निर्माण भी सर्वप्रथम वहीं होता है। कुरुक्षेत्रके मैदान में समुत्पन्न और ब्रह्मावर्तमें प्रकटित वेदोंका सबसे उत्तम अर्थ अयोध्यामे ही होकर संस्कृतका राष्ट्रभाषात्व निखिल भूमण्डलमे घोषित करताहै। अयोध्या यदि मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्र जी को उत्पन्न करने का गर्व करती है तो जैन-सम्प्रदाय के प्रथमप्रवर्तक ऋषभदेव, पार्श्वनाथ आदिकी जन्मभूमि भी यही है। अयोध्या यदि बुद्धकी तपःस्थली बन कर लगभग चार हजार भिक्षुओं का बौद्धविश्वविद्यालय रखती है तो मक्का-खुर्द बनकर इस्लामधर्मकी भारत में प्रधानपीठ बननेका अनल्प अभिमान उस में भरा है अयोध्या संसार की सब बातों में अनुपम और श्रेष्ठपुरी है।

जैनधर्म अयोध्या से उत्पन्न होकर सारे भारत में फैला समय के परिवर्तन से आज अयोध्या का सच्चा इतिहास लुप्त है। यदि कम से कम अयोध्या से सम्बन्ध रखने वाले तत् तत् सम्प्रदायानुयायी इस पुस्तक के लेखक पं० ज्येष्ठाराम जी का अनुगमन करें तो उनके इतिहास की स्पष्टता के साथ अयोध्या के इतिहास का भी खुलासा बहुत कुछ भारतीयों के

सामने रखा जा सकता है जिसके अभाव के कारण भारतीय इतिहास की रूप रेखा अभी तक सर्वांशतः स्पष्ट नहीं हो सकी। हमारा विश्वास है कि 'अयोध्या का इतिहास" पुस्तक के लेखक उत्तरोत्तर अपने विषय की खोज करते रहेंगे जिससे एक बहुत बड़े अभाव के पूर्ण होने की पूरी सम्भावना है।

संस्कृत कार्यालय अयोध्या
मकर संक्रान्ति
१९९४ विक्रमाब्द

कमलाकान्त त्रिपाठी
साहित्यालङ्कार।

❀ मन्तव्य ❀

परिवर्तनशील संसार अपने बलपर आगे बढता जा-रहा है। पुरातत्वबेत्ताओं की खोजसे प्राचीन नगरियों के खण्डहरों में से निकलते प्राचीन अवशेष, शिलालेख, स्तुप, कीर्ति स्तम्भ मूर्तियाँ दानपत्रों के ऊपरसे, शिक्का, महोरसे, नगरियों के राजाओं का राज्य कालकी शोध मिलती जारही है। सारनाथ, राजग्रही नालन्दा, तक्षशिला, मोहनजोडेरो, उसके प्रत्यक्षप्रमाण हैं जिस से इतिहास में भी नया प्राण आरहा है, साहित्य और इतिहास का विषय एक ऐसा है कि जिसमें कुछ न कुछ नया देखने को विचारने को मिलता है।

अयोध्या भी एक जगत की प्राचीन नगरियों में से एक अजोड़ नगरी है इस पवित्र भूमि में बैठकर का जैनधर्म के आचारियों ने शास्त्र, सूत्र रचे हैं ऐसी भूमि के तीर्थ का इति-हास लिखनेका साहस मेरे जैसे अल्पज्ञ ने किया है वोभी हिन्दी में, मेरी मातृभाषा गुजराती है अभ्यास चार किताब का है मगर अयोध्या का इतिहास लिखने की प्रेरणा मेरा

अयोध्या वास हुवा तब से हुई थी मगर साधन न मिलने पर लाचार था और पुस्तक लिखने का मेरा प्रथम प्रयास था इस तीर्थ में नौकर होने पर मेरी प्रेरणा प्रबल हुई देवगुरुकी कृपा से प्रथम तो गुजराती भाषा में छोटी सी किताब लिख दी जिसको सेठ कस्तूरचन्द त्रिभुवनदास की धर्मपत्नी बाई चञ्चल की तरफ से छपवाने का प्रबन्ध होगया और अहमदाबाद मद्धे वाईबीजकोर बाईने १००० एकहजार कांपी छपवा दिया वो खप जाने पर इसका प्रमाण भूतइतिहास लिखने का शुरू किया, कईएक जैन ग्रन्थों का बौद्ध ग्रन्थों का और गुजराती पुस्तकों का मनन किया खासकर स्व० लालासीताराम बी० ए० का लिखा हुवा "अयोध्या का इतिहास" का सहारा मिला साथ में अवध गेझेटियर की शोध करके पुस्तक पूरा कर दिया मगर छपवाने के लिये कोई श्रावक श्राविका ने मदद न दी, कुछ भी सहायता न मिली।

पुस्तक छपवाने में मेरा कोई स्वार्थ नही है जैनधर्म की तीर्थकी सेवाकी खातर शासन धर्म के प्रचार की खातर किया है पुस्तक की कीमत वसूल होजाने पर जो रकम बचेगी जिसकी गुजराती कांपी छपवायेंगे और उसका हिसाब भी बाहर पड़ेगा और जो भाई बहिन मदद करेंगे उसका भी नाम छप जायगा।

पुस्तक लिखने में जो जो पुस्तक का सहारा लिया है वो सब पुस्तक कर्ताओंका उपकार मानता हूं पुस्तक में कोई गलती हो गई होतो विद्वान महाशय मुझे खबर देंगें मेरी भूल कबूल करके उसको जरूर सुधारने का प्रबन्ध किया जायगा शासन धर्म प्रेमियों से मेरी प्रार्थना है कि मुझे मदद करके मेरा उत्साह बढ़ायेंगें।

मकरशंक्रान्त—
विक्रम स० १९९४
अयोध्या तीर्थ

शासन धर्मानुप्रेमी—
पं० जेष्ठाराम शर्मा

विषय-सूची।

प्रथम सर्ग-(आदिकाल)

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठ
१—	तीर्थ वन्दना	१
२—	सरस्वती स्तोत्र।	२
३—	गुरु वन्दना।	३
४—	तीर्थ वृत्तांत।	३
५—	अयोध्या का महात्म्य।	६
६—	राजधानी का निर्माण।	८
७—	सांकेत पुर	१०
८—	कौशिल्या, विनीता नगरी।	११
९—	श्रीऋषभदेवजी का जन्म लेना।	१४
१०—	श्रीऋषभदेव का प्रथम राजा होना	१५
११—	श्रीऋषभदेव का साधू होना	१६
१२—	श्रीप्रभुका केवल्यज्ञान होना	१७
१३—	पुरीमताल-प्रयाग	१७
१४—	भरतेश्वरजी को सिद्धचक्र की प्राप्ति	१८
१५—	माता मारुदेवा को केवल्यज्ञान	१९
१६—	अयोध्या में प्रथम तीर्थकी स्थापना	२०
१७—	श्रीशत्रुञ्जय का प्रथमोद्धार करना	२१
१८—	पांचभगवान के १९ कल्याणक	२१

द्वितीय सर्ग (पौराणिक काल)

१—	अवतारी महापुरुषों का वास	२२

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठ
२—	आदर्श महिलाओं का वास	२३
३—	पुण्य नगरी के पांच नाम ।	२३
४—	अयोध्या का इतिहास	२४
५—	अयोध्या की सरहद	२४
६—	अयोध्या पर विपत्ति ।	२५
७—	बौद्ध और जैनधर्म की प्रवृत्ती ।	२६
८—	वीर प्रभुका अयोध्या विहार ।	२७
९—	गौतम स्वामी की सूत्र रचना	२७

तृतीय सर्ग- (इतिहास काल)

१—	शिशुनाक वंश का राज्य काल	२८
२—	पाटलीपुत्रमें राज्यारोहण	२९
३—	श्रीस्थुलीभद्र स्वामी	३०
४—	मौर्य कुलवंशी गुप्त राज्य काल	३०
५—	युनानी राजा सिकन्दर	३०
६—	सेल्युकस एलची	३०
७—	महाराजा विक्रमादित्य	३१
८—	राजा कनिष्क	३१
९—	श्रीरामचन्द्रजी का जन्म स्थान	३१
१०-	चीनी यात्री फाहियान	३२
११-	महाराजा अशोक	३२

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठ
१२-	महाराजा कुणाल	३२
१३-	महाराजा सम्प्रति	३३
१४-	श्रीअयोध्या जी का समोवसरण	३३
१५-	आर्य सुहस्ती सूरिजी	३३
१६-	गुप्तवंशियोंका मगधमें से टूटना साधुओंका बिहार	३४
१७-	पुष्पमित्रका अश्वमेध यज्ञ	३४
१८-	कलिङ्गपती खारवेल	३५
१९-	उदयगिरि की हाथी गुफा	३५
२०-	नन्दराजा केतुभद्र	३६
२१-	युनानी राजा मीनान्डर	३६
२२	विहार में १० साल का दुष्काल	३६
२३	जगन्नाथपुरी में तीर्थ स्थापन	३७
२४-	जावडशाका शेत्रुञ्जय उद्धार	३७
२५-	रत्नप्रभा सूरिजी	३७
२६-	बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ	३७
२७-	आगमोद्धार	३७
२८-	वैश्यराजा हर्षवर्धन	३८
२९-	चीनी यात्री ह्यांनचांग	३८
३०-	कुमारिल भट्ट	३८
३१-	चैत्यवासी यती महाराज	३९
३२-	श्रीवात्सव राजा	४०

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठ
३३-	महम्मद गोरी का आक्रमण	४१
३३-	जन्मस्थान का मन्दिर टूटना	४२
३५-	अयोध्या का ब्राह्मण राजा	४३

चतुर्थ सर्ग-(वर्तमान काल)

१—	काशी निवासी महाराजा	४५
२—	अयोध्या में जैन मन्दिर	४५
३—	समोवसरण जी	४५
४—	बौद्ध ग्रन्थों में अयोध्या	४६
५—	ह्यांन चांग का वर्णन	४६
६—	विशाषा नगरी	४७
७—	जिन प्रभव सूरिजी का अयोध्यावास	४८
८—	कल्प नियुक्ति पर भाष्य	४८
९—	प्राचीन प्रतिमायें	४९
१०-	तीर्थ यात्रा	५०
११-	तीर्थ महात्म	५१
१२-	अयोध्या का राज्यकाल	५२
१३-	तीर्थ कल्प में अयोध्या	५९
१४-	कल्याणक स्तवन	६०

श्री वीतरागायनमः ।

अयोध्या का इतिहास ।

प्रथम सर्ग

(आदि-काल)

तीर्थ-वन्दना ।

ॐ नमः श्रीतीर्थराजाय सर्व तीर्थमयात्मने ।
अर्हते योगिनाथाय, रूपातीतायतायिने ॥ १ ॥

सर्व तीर्थमय जिसका स्वरूप है ऐसे श्रीतीर्थराज को परम योगीश्वर देहातीत और विश्वत्राता ऐसे अरिहंत परमात्मा को नमस्कार हो ।

॥– अथ सरस्वती स्तोत्र –॥

सरस्वती महाभागे, वरदे कामरूपिणी ।
विश्वरूपी विशालाक्षी, देविद्वापरमेश्वरी ॥ २ ॥
सरस्वती मयादृष्टा वीणापुस्तकधारिणी ।
हंसवाहनसंयुक्ता विद्यादाहिनकर प्रदा ॥३॥

॥ अथ गुरु वंदना ॥

सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धीनिधानाय, गौतम स्वामिने नमः ॥४॥
अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥५॥

॥ श्री तीर्थवृत्तांत । तीर्थमाहात्म्य ॥

सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं-
प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनं ।
नरामरेंद्रै स्तुतपादपंकजं-
नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमम् ॥३॥
श्रीमद्वृषभसर्वज्ञ वृषभांकसुवर्णरुक् ।
जगद्देवाधिदेवाहन्नाभिराजेन्द्रनन्दनः ॥४॥
युगस्यादौ स्वयायेन ज्ञानत्रय युते नयत् ।
जनन्या मरुदेव्यश्च पावनं जठरं कृतं ॥८॥
तौ दम्पत्यौ तदा तत्र भोगै करमतां गतौ
भोगभूमि श्रियं साक्षाच्च कृतुर्विगुताबपि ६८॥९

श्री ऋषभदेव जी (आदिनाथ) के माता पिता मरू-देवी और नाभिराजा इसमें भोगभूमि से वियुक्त होने पर बड़े आनन्द से रहे ।

तस्या मलेकृते पुण्ये देशे कल्पाङ्घ्रि प्राप्यये ।
तत्पुण्यै मुहुराहूतः पुरहूतः पुरीं दधात् ॥६६॥१०

सुरा ससंभ्रमा सद्यः पाकशासनशासनात्।
तां पुरीं परमानन्दाद्व्यधुः सुरपुरीः विभाः ७०॥११

कल्प वृक्ष के नष्ट होने पर उस देश में (आर्यावर्त में) उन दोनों ने अलंकृत किया था, उन्हीं के पुण्यों से आहूत होकर इन्द्र ने पुरी रची जो स्वर्ग के देवताओं ने बड़े चाव से इन्द्र की आज्ञा पाकर एक पुरी बनाई जो देव पुरी के समान थी।

स्वर्गस्येव प्रतिच्छन्दं भूलोकेऽस्मिन्निधीत्सुभिः।
विशेषरमणीयैव निर्ममे साऽमरैः पुरी॥७१॥ १२॥

देवताओं ने यह पुरी ऐसी बनाई कि भूलोक में स्वर्ग का प्रतिबिम्ब हो।

स्व स्वर्गस्त्रिदशावासस्वल्प ह्य्यवमन्यते।
परः शतः जनावासभूमिका तान्तु ते वधुः॥७२॥
इतस्ततश्च विक्षिप्तानानीयानीय मानवान्।
परा निवेशयामासुविन्यासैः विविधैः सुराः॥७३॥

देवताओं ने अपने रहने की जगह का अपमान किया, क्योंकि यह त्रिदशा वास (त्रिदश ३३ देवताओं का

वास) थी इससे उन्होंने सैकड़ों मनुष्यों के रहने के लिये जगह बनाई। इधर उधर बिखरे मनुष्यों को इकट्ठा करके देवों ने नगर सजाया।

नरेन्द्रभवनश्चास्या सुरैर्मध्ये निवेशितम्।
सुरेन्द्रनगरस्पर्धि परार्ध्य विभवान्वितम् ॥७४॥
सूत्रामा सूत्रधारोऽस्या शिल्पिनः कल्पजासुराः।
वास्तुजातामही कृत्स्ना सोध्यानस्तु कथम्पुरी ॥७५॥

देवों ने इस पुरी के बीच में राजा का प्रासाद बनाया इसमें असंख्य धन धान्य भर दिया जिससे यह इन्द्र के नगर अमरापुरी की टक्कर का होगया। जब इन्द्र इसके सूत्रधार थे, कल्प के उत्पन्नदेव कारीगर थे और सारी पृथ्वी में से जो सामान चाहा सो लिया।

सं च स्कुरुश्च तां वप्र प्राकार परिखादिभिः।
अयोध्यानगरं नाम्ना गुणे नाप्यरिभिः सुराः ॥७६॥

फिर देवों ने कोट और खाई से इसे अलङ्कृत किया। अयोध्या केवल नाम ही से अयोध्या नहीं थी बल्कि बैरियों के लिये अयोध्या थी जिसे कोई जीत न सके*।

* श्री जिनसेनाचार्य कृत "आदिपुराण" अ० १२ श्लोक-६८, ६९, ७०, ७१; ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८।

अयोध्या माहात्म्य।

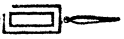

कलिकाल सर्वज्ञ भगवान् श्रीमद हेमचन्द्राचार्य कृत— "त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित्र प्रथमपर्व, सर्ग २, श्री आदीश्वर चरित्र से उद्धृत।

विनीता साध्वमीं तेन विनीताख्यां प्रभो पुरीम्।
निर्मातुं श्रीदमादिश्य मघवान्त्रिदिवं ययौ ॥९११॥
द्वादश योजना यामां नव योजनविस्तृताम्।
अयोध्येत्यपराभिख्यां विनीतां सोऽकरोत्पुरीम्॥९१२
तां च निर्माय निर्मायः पूरयामास यक्षराट्।
अक्षय्यवस्त्र-नेपथ्य-धन-धान्यै निरंतराम् ॥९१३॥

अयोध्यानाम तत्रास्ति नगरी लोक विश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेण पुरैव निर्मिता स्वयम्॥
आयता दशच द्वेय योजनानि महापुरी।
श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा नाना संस्थान शोभिता॥

—बालमो० रा० बा० का०।

पुरमविशदयोध्यां मैथिली दर्शनीनाम॥

—रघुवंश १० सर्ग ७६ श्लोक।

वज्रेन्द्र-नील-वैडूर्य-हर्म्य-किर्मीररश्मिभिः।
भित्ति बिनापि खेतत्र चित्र कर्मविरच्यते ॥९'४॥

इन्द्र देव की आज्ञा से कुबेरजी १२ योजन चौड़ी ९ योजन लम्बी विनोता पुरी बनाई जो जम्बुद्वीपके भरत खंड में जिसमे अक्षय धन धान्य भरदीया। ऐसी इन्द्र पुरी जिसका दूसरा नाम अयोध्या था।

तत्रोश्चैः कांचनैर्हर्म्यै मेरुशैल शिरांस्यभि:
यत्रालंबन लांवेब ध्वज व्याजाद्वितन्यते ॥९१५॥
तत्रप्रदीप्तमाणिक्य कपिशीर्षं परं पराः।
अयत्ना दर्शतां यान्ति चिर खेचर योषिताम् ॥९१६
तस्यां गृहां गणभुवि स्वस्तिकन्या स्त मौक्तिकैः।
स्वैरं ककिक कोमां कुरूते वालिका जन ॥९१७
तत्रोद्यानोच्चवृक्षाग्रस्खल्यमानान्यहर्निशम्।
खेचरीणां बिमानानि क्षणं यांति कुलायताम् ९१८
तत्र दृष्ट्वाद्दहर्मेषु रत्नराशीन् समुत्थितान्।
तदावर ककुटोऽयं तर्क्यते रोहणाचलः ॥९१९॥

जलकेलिरतस्त्रीणां त्रुटितै हीरमौक्तिकैः।
ताम्रपर्णी श्रियं तत्र दधते गृहदीधिकाः ॥९२०॥
तत्रैभ्याः संति ते येषां कस्याप्येकतमस्य सः।
व्यवहर्तुर्गतो मन्ये वणिक्पुत्रो धनाधिपः ॥९२१॥
नक्तमिंदु दृषद्भित्ति मंदिरस्यंदिवारिभिः।
प्रशांतपांशवो रथ्याः क्रियंते तत्र सर्वतः ॥९२२॥
वापीकूप सरोलब्धैः सुधा सोदरवारिभिः।
नागलोकं नवसुधाकुम्भं परिबभूव सा ॥९२३॥

कुबेर ने अड़तालीस कोस लम्बी छत्तीस कोस चौड़ी

अस्ति नाम्ना विनीतेति शिरोमणिरिवावनेः ॥

—द्वी० पर्व।

राजधानी का निर्माण।

—:*:*:*:—

कुबेर ने अड़तालीस कोस लम्बी छत्तीस कोस चौड़ी विनीता नामक नगरी तैयारकी यक्षपति कुबेर ने उस नगरी को अक्षयवस्त्र, नेपथ्य और धन्य धान्य से पूर्ण किया। उस नगरी में हीरे इन्द्र नीलमणि और वैडूर्य मणि की बड़ी २ हवेलियां अपनी विचित्र किरणों से आकाश में भीतके विना-

ही विचित्र चित्र क्रियायें रचती थी अर्थात् उस नगरी की रत्न मय हवेलियोंका अकस आकाश में पड़ने से बिना दीवारों के अनेक प्रकार के चित्र बने हुये दिखाई देते थे ।

मेरु पर्वत की चोटी के समान सोने की ऊंची हवेलियां ध्वजाओं के मिषसे चारों तरफ से पत्रालम्बन की लीला का विस्तार करती थी, जो विद्याधरों की सुन्दरियों को बिना यत्न के दर्पण का काम देती थी, नगरी के घरों के आंगन में मोतियों की स्वस्तिका बनती थी और मोतियों से बालिकायें इच्छानुसार पोची का खेल खेलतीथी नगरीके बागीचोंमें रात- दिन अड़नेवाले खेचरियों के विमान क्षणमात्र पक्षियों के घोसलों की शोभा देते थे वहां की अटारियों और हवेलियों में पड़े हुये रत्नों के ढेरों को देखकर रत्न- शिखर वाले रोहणाचल का ख्याल होता था, वहां की ग्रहवापिकाये, जलक्रीड़ा में आसक्त सुन्दरियों के मोतियों के हार टूट जाने से ताम्रपर्णी नदी की शोभा को धारण करतीथी वहां रात में चन्द्रकान्तमणी की दीवारों से झरने वाले पानी से राह की धूल साफ होती थी नगरी अमृत- समान जलवाले लाखों कुए बावली और तालावों से नवीन अमृत

कुण्ड वाले नाग लोक के समान शोभा देती थी* ।*

॥ सांकेत पुर ॥

सांकेत रुढी रयष्या श्लाध्यैव सुनिकेतनैः ।
स्वनिकेत इवा हातुं साकूतेः केत वाहुभिः ॥७७॥

—आदिपुराण ॥ अ०-१२ ॥

इसको सांकेत इसलिये कहते थे कि इसमें अच्छे २ मकान थे उनपर झण्डे फहराते थे जिस से जानपड़ता था कि देवताओं को नीचे भूलोक में बुलाते हैं।

---

* अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पुः अयोध्या ।
तस्यां हिरण्मयः कोश स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥
[अथर्ववेद द्वितीय खण्ड]

॥ कौशल्या नगरी । विनता नगरी ॥

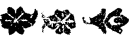

सुकोशलेति विख्यातिं सादेशाभि ख्यया गता ।
विनीत जनता कीर्णां विनीतेति च सामता ॥७८॥

—आदिपुराण ॥ अ० १२ ॥

इसका नाम सुकोशल इस कारण था कि उसी नाम के देश का (उत्तर कौशल का) प्रधान नगर था और विनीत जनों के रहने से इसका विनीता नाम पड़ा ।*

---

*साकेत नार्योऽञ्जलिभिः प्रणेमुः ॥

—रघुवंश । सर्ग- १६

स्वयमागतं स्वयमागतं साकेतमिति संज्ञा संवृता ।

—बौध ग्रंथ दिव्यावदान

कोसलो नाम विदितः स्फीतो जनपदो महान् ।
निविष्टा सरयूतीरे प्रभूत धनधान्यवान् ॥

—वाल्मीकीय रामायण ॥

॥ ॐ नमोऽर्हन्तो ऋषभो (यजुर्वेद) ॥

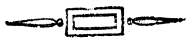

प्रियव्रतो नामसुतो मनोः स्वायंभुवस्य यः।
तस्याग्निघ्रस्ततो नाभि ऋषभस्तत्सुतः स्मृतः॥
तमाहुर्वासुदेवांश मोक्षधर्म विवक्षया।
अवतीर्ण पुत्रशतं तस्यासीद्ब्रह्मपारगम्॥
तेषां वै भरतो ज्येष्ठो नारायणपरायणः।

—श्रीमद्भागवतपुराण ५ स्कन्द।

धुन्वंत उत्तरासंगां पतिं वीक्ष्य चिरागतम्।
उत्तरा कोसला माल्यैः किरंतो ननृतुः मुदा ॥२०

—श्रीमद्भागवतपुराण ९ स्कन्द; १० अ०

बृद्धेत्कोशला जादाञ्ञ्यङः।

—पाणिनिसूत्र ४। १। १७१

कायन्दी, मायन्दी, चम्पा, ओज्झा, यउज्जैणी॥४॥
सिरिमइ समराइच्च कहा॥

नाभिस्तु जनयेत्पुत्रं मरुदेव्यां मनोहरम्।
ऋषभं क्षत्रियश्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूर्वकम॥
ऋषभाद् भारतो जज्ञे वीरः पुत्र शताग्रजः।
सोऽभिषिंच्यार्षभः पुत्रम्महा प्रव्रज्जयांस्थितः॥
हिमाद्रेः दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत्।
तस्मात् भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः॥ *

—ब्रह्मांडपुराण पूर्वभाग अ० १४।

ॐ अर्हंतो मंगलं नित्यं सिद्धा जगति मंगलम्।
मंगलं साधवो मुख्यं धर्म सर्वत्र मंगलम् ॥१॥
लोकोत्तमाइहार्हन्तः सिद्धा लोकोत्तमाः सदा।
लोकोत्तमा यतीशानां धर्मो लोकोत्तमोहतां॥२॥
शरणं सर्वदार्हन्ता सिद्धा शरण मंगलम्।
साधवः शरणं लोके धर्मं शरणं हन्ताम्॥३॥

* अष्टषष्टिषु तीर्थेषु यात्रायां तत्फलं भवेत्।
आदिनाथस्य देवस्य स्मरणेनापि तद् भवेत्॥

—शिवपुराण।

पूर्वं इन्द्र, कुबेर देवताओं की बनाई हुई (१२ योजन चौड़ी ६ योजन लम्बी) जहां विनीतजन सर्वदा वास करते रहे देव, गंधर्व और किन्नर जिस भूमि में अवतरणीय के लिये लालायित रहते सर्व जगत् में सर्व खण्डों में श्रेष्ठ- सर्व नगरियों की शिरोमणि सर्व तीर्थों में पवित्र जैनधर्म की जन्मदाता- ऐसी इन्द्रपुरी सम अमरपुरी अयोध्या नगरी में श्रीत्रिभुवन पूजित इक्ष्वाकु वंशके स्थापक सर्व क्षत्रियों के पूर्वज क्षत्रियों में श्रेष्ठ युगलादि धर्म के प्रणेता शासननायक अनन्त उपकारी अनन्त ज्ञानी श्रीजिनेश्वरदेव ऋषभ जी राजा नाभी के दरबार माता मारुदेव्या की कुक्षी से मनोहर ऐसे भगवान् प्रगट भये। वह भी आर्यावर्त के अहो भाग्य!!

आदिमं पृथ्वीनाथमादिमं निः परिग्रहं।
आदिमं तीर्थनाथञ्च ऋषभस्वामिनं स्तुमः॥

—सकलार्हत्

आदि + नाम प्रथम ऐसे पृथ्वीके नाथ परिग्रह- प्रथम परिग्रह रहित- यानी प्रथम साधु वर्तमान चौबीसी में जैन धर्मकी दीक्षा लेकर प्रथम साधु भये। आदिमं तीर्थ जापं च- प्रथम कैवल्य ज्ञानप्राप्त करके प्रथम तीर्थ की स्थापना कर प्रथम तीर्थंकर कहलाये।

पवित्र विनता नगरी में राजानाभि के वहां भगवंत कुमारावस्था में जब रहे तब एक दिन युगलीये आकर, आकर और धिक्कार- इन तान नीतियों को उलङ्घन करने लगे इस कारण युगलीये प्रभु के पास आये। और प्रभु से अनुचित बातों के सम्बन्ध में निवेदन किया जाति स्मरण ज्ञान प्रभु ने कहा—

"लोक में जो मर्यादा का उलंघन करते हैं, उन्हें शिक्षा देनेवाला राजा होता हैं।

युगलियो ने कहा- "स्वामिन् आप ही हमारे राजा हैं" यह बात सुनकर प्रभु ने कहा- "तुम नाभिकुलकर के पास जाकर प्रर्थना करो वही तुम्हें राजा देंगे।"

युगलियों ने प्रभु की आज्ञानुसार नाभिकुलकर के पास जाकर सारा हाल निवेदन किया जवाब में यही मिला कि "ऋषभ तुम्हारा राजा हो" युगलिये खुश होते हुये भगवान् के सन्मुख आकर नमन किया। सौधर्म कल्प के उस इन्द्र ने सोने की वेदी रचकर पाण्डुक वला शिला के समान सिंहासन बनाकर तीर्थ जल से प्रभु का राज्याभिषेक किया। तब श्रीआदि मानव श्रेष्ठ भगवंत ऋषभ देव इस संसार का बंधारण और जैन आर्य संस्कृति की रचना कर समस्त जीवों पर अनन्त उपकार किया।

शस्त्रधारी और लोक रक्षा मे दक्ष ऐसे क्षत्रियों को धर्मतत्व और क्रिया में निष्ट ब्रह्मचर्ययुक्त ऐसे ब्राह्मणों को कृषी वाणिज्य और गोपालन करने वाले ऐसे वैश्यों को और अन्य सर्व प्रकार का काम करने वाले ऐसे शूद्रों के लिये चातुर्वर्ण की व्यवस्था कर श्री जैन आर्य संस्कृति का प्रवाह चालू किया पूर्वके महा पुण्य योग से अपने को अजोड जैन शासनकी प्राप्ती हुई है वोभी अपने अहो भाग्य !

जगत पिता किंवा जगतगुरु श्रीजीनेश्वर भगवान् ऋषभदेवजी का जन्म अयोध्या में हुआ इस पवित्र भूमि में भगवान् ने दिक्षालिया। इन्द्र और देवताओं ने समवसरण-की रचना की शासन नायक श्रीआदिश्वरे शासन व्यवस्था के लिये चतुर्विध संघकी ८४ चौरासी गणधरकी दुनिया के आगे दृष्टांत दिखाने के खातिर शासन प्रणाली की जड़ कायम करने के लिये अपने १०० वीर पुत्र में से ज्येष्ट पुत्र परम प्रिय भरतेश्वरजी को विनीता नगरी का अधीष्ठाता स्थापी आर्यावर्त के चक्रवर्ती सम्राट को गद्दी देकर बाकी ९९ पुत्रो को आर्यावर्त अन्तरर्गत अलग २ प्रान्त राज्य कायम कर कारोबार सौंप दिया और भरतजी के पुत्र पुण्डरीकजी को प्रथम गणधरकी पदवी देकर सन्मानित किया।

भगवान् विहार करते एक समय फिर विनीता नगरी

के एक महल्ले में जिसका नाम था † पुरीमताल वहां आके ठहरे वहां वट वृक्ष के नीचे त्रिवेणी सङ्गम पर भगवान् को प्रथम कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ उसी वक्त तीर्थ--

† पुरीमताल— वर्त मान काल में प्रयाग के नाम से मशहूर हिन्दु सनातनधर्म का तीर्थराज कहलाता है जहां त्रिवेणी संगम पर किले के भीतर मौर्य सम्राट्महाराज अशोक की बनाई हुई गुफा मन्दिर में अछयवट (अक्षयवट) के नीचे कैवलय ज्ञान कल्याणक की चरण पादुकायें विराज मान हैं।

ऋषभदेव अयोध्यापुरी; समोसयी सामी हितकारी।
भरत गयो वन्दने काज; ए उपदेश दियो जिनराज॥
जगमां मोहटो अरिहंत देव; चौसठ इन्द करे जसु सेव।
तेहसी मोहोटो संघ कहाय; जेहने प्रणमें जिनपर राय॥
लेहथी मोहोटो संघवी कहायो; भरत सूणीने मन गहगह्यो।
भरत कहेते किम पामिये; प्रभु कहे शेत्रुंज यात्रा किये॥
भरत कहे संघवी पद मुज; ते आपो हुं अंगज तुझ।
इन्द्रे आठया अक्षत वास; प्रभु आये संघवी पद तास॥
इन्द्रे तेणी बोला तत्काल; भरत सुभद्राबेहुने माल॥
पहरावा धर संपेडिया; सखर सोनाना रथ आपीयां॥
ऋषभदेवनी प्रतिमावली; रत्नतणी कीधी मनरली।
भरते गणधर घर तेडीया; शांतिक पुष्टिक सहुतिहांकिया॥

रूप मारुदेव्या माता के पास, श्रीभरतेश्वरजी के पास अनुचर आगये दूसरी तरफ से सिद्धि चक्रकी वधाई लेकर अनुचर आये भरतजी विचार में पड़गये "पहिले सिद्ध चक्र की भेट कीजाय कि भगवान् की वन्दना कीजाय"?

माता मारुदेव्या के पास भी अनुचर आये थे माताजी वृद्ध होचुकी थी भगवान् अपने प्रिय पुत्र का नाम सुनकर ही माताजी को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुवा, और भरतजी को पास बुलाकर भगवानकी वन्दनाकी तैयारी का आदेश दिया गया।

कंकोतरी मूकी सहुदेस; भरते तेडयो संघ अशेष।
आव्यो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम तीर्थंकर यामाकरी॥
संघ भक्ति कीधी अति घणी; संघ चलायो शेत्रुंजय भणी।
गणधर बाहुबली केवली, मुनिवर कोडीसाथे लियावली॥
चक्रवर्तिनी सघली ऋद्धि; भरते साथे लीधी सिद्धि।
हयगज रथ पायक परिवार, तेतो कहत न आवे पार॥
भरतेश्वर संघवी कहेवाय; मार्गे चैत्य उधर तो जाय।
संघ आव्यो शेत्रुंजय पास; सहुनीपुरी मननी आस॥
नयणे निरिख्यो शेत्रुंजो राय; मणी माणिक मोतीशं वधाय।
निणे ठामे रही महोत्सव कियो; भरतें आणंद पुर वासियो॥

समस्त आर्यावर्त्त अन्तर्गत राजा महाराजाओं को साथ: लेकर सम्राट-श्रीभरतेश्वरजी वन्दना को पधारे तो क्या देखा कि अमरापुरी के देवताओं ने मण्डप और समवसरण बनाया है श्रीगडापर भावमण्डप में भगवान

संघशेत्रंजय ऊपर चढ्यो; फरसंतां पताक उडपड्यो ।
केवल ज्ञानी पगलातिहां; प्रणम्या रायण रुखघेजिहां ॥
केवल ज्ञानी स्नात्र निमित्त; इशानेन्द्रे आणी सुपवित्त ।
नदी शेत्रंजी सोहामणी भरते दीठी कौतुक भणी ॥
गणधर देवतणे उपदेश; इन्देवलिदीधो आदेश ।
आदिनाथ तणो देहरो; भरते काराव्यो गिरि सेहरो ॥
सोनाना प्रासाद उत्तंग; रत्नतणी प्रतिमा मनरङ्ग ।
भरते श्रीआदीश्वरतणी; प्रतिमा स्थापी सोहामणी ॥
मरुदेविनी प्रतिमावली; माहीपुनम थापी रली ।
ब्राह्मि सुंदरी प्रमुख प्रासाद; भरत थाप्या नवले नाद ॥
एम अनेक प्रतिमा प्रासाद; भरकराव्या गुरु प्रासाद ।
एह भण्यो पहेलो उद्धार; सघलोही जाणे संसार ॥

सवतचार सत्योतरे (४७७) हुवाधनेश्वर सूरि ।
तिण शेत्रुंजय महात्म; कहयुं शिलादित्य हुजूर ॥

शेत्रुंजय महात्म ग्रन्थथाये; रासरच्यो अनुसार ।

अरिहंतविरामान हैं। भरतेश्वरजी प्रथम वन्दना कर सन्मुख बैठे वहां पर भगवाने ९९ पुत्र प्रमुख बाहुबलीजी प्रातः स्मरणीय सती ब्राह्मी सती सुन्दरी जैसी सुशील पुत्रियों को दीक्षा देकर प्रथम आर्या-औ शिष्य बनाके दीक्षित किये श्रीभरतेश्वरजी ये श्रीअयोध्याजी में भगवान के आदेशानुसार कनकमय मन्दिर प्रथम तीर्थराज की स्थापना की जब—

उवणेउ मङ्गलं वा; जिणाण मुहलालि जाल संवलिया।
तित्थ पवत्तण समये, तिअस विमुक्का कुसुम वुट्ठी॥

इन्द्र और देवताओं ने श्रीतीर्थपती राज के ऊपर कुसुम वृष्टि की श्रीजीनेश्वर ऐसे तीर्थ की स्थापना की कि समस्त जीव तीर्थ की आराधना द्वारा संसार के मोह जाल से छूटकर मोक्ष को प्राप्त हो।

सम्मत सोलछियासिये (१६८६) श्रावण सुदी सुखकार।
रास भव्यो शेत्रुंजातणोये; नगर नागोरे मझार॥

खरतर गच्छीय श्रीपूज्य श्रीजिनचन्दसूरिश्वर तस्शीष्य सकल चन्द सुजगीस तासशिष्य उपाध्याय समय सुन्दर रास रच्यो जेसलमेर मद्धे और भव्यो नागोर मद्धे सं० १६८६ श्रावण सुदी में।

कनक भवन मंदिर में रत्नप्रतिमा स्थापना कर भगवान के आदेशानुसार रत्नप्रतिमा साथ लेकर श्रीशेत्रंजय तीर्थ की स्थापनार्थे संघनी काल कर सिद्धक्षेत्र श्रीशेत्रंजय तीर्थ पर प्रथमोद्धार कर प्रथम सिद्धेश्वरजी के पवित्र कर कमलों से श्री ऋषभदेवजीकी, श्रीगणधर स्वामी पुंडरीकजी की प्रतिमा स्थापन की।

श्रीपांच भगवानके१६ कल्याणक।

आर्यावर्त के भरतक्षेत्र में उत्तर कोशल की अजोड पवित्र भूमि में ऋषभदेव के च्यवन, जन्म और दिक्षा ऐसे तीन कल्याणक। २-भगवान श्री अजितनाथजी के ३-भगवान श्रीअभिनन्दन, ४-भगवान श्रीसुमतिनाथ, १४-भगवान श्रीअनंत नाथजी के च्यवन, जन्म, दिक्षा और कैवल्य ऐसे चार करके १६ मिल कर १२ कल्याणक हुये।

इति प्रथम सर्ग।

कनकभवन—सत्ययुग में श्रीऋषभदेवजी के देशनानुसार श्रीभरतेश्वरजी ने कनक-सुवर्ण मन्दिर बनवाकर रत्नजटित प्रतिमा स्थापनकी बाद द्वापर में युधिष्ठिर संवत् पूर्वे ६१४ श्रीकृष्णवासुदेवे यात्राकर कलस चढाया युधिष्ठिर संवत् १४३१-इ-स-पूर्व २८८ महाराजाविक्रमादित्य जब महाकविकुल भूषण कालीदास के साथ आकर उसका जीर्णोद्धार किया।

द्वितीय सर्ग ।

मध्य (पौराणिक) काल

श्रीअयोध्याजी में अवतारी महापुरुषों का वास

पूर्व काल मे नाभिराय भगवान ऋषभदेव से लेकर भरत चक्रवर्ती, बाहुबली, पुंडरीकजी सूर्ययशाराजा, श्री यासकुमार जितशत्रुराजा श्रीअजितनाथभगवान संवरराया श्रीअभिनन्दन, मेघराया, श्रीसुमतिनाथ, सिंहसेनराया, श्रीअनन्तनाथ, सगरचक्रवर्ती, सत्यवादी राजाहरिश्चन्द्र, महाचक्रवर्ती सम्राट दिलीप, दिग्विजयी सूर्यकुलभूषण-राजा रघु [illegible] महाराजा भगीरथजी, [illegible] राजा दशरथ, एक पत्नि व्रतधारी मर्यादा पुरुषोत्तम राजा रामचन्द्र, [illegible] राजा चन्द्रावतन्स, राजा सुमित्र, श्रीमहावीर स्वामी के ९ मे गण-धर अचलजी, श्रीसुव्रताचार्यजी, श्रीजिनप्रभामुनिजी, इत्यादि अनेक राजा महाराजा, साधु अचार्य जैसे महान अवतारी पुरुष होगये हैं ।

सन्नारी पतिव्रता आदर्श महिलाओं का वास

श्री मारुदेव्या माता से लेकर रानी सुनन्दा, रानी-- सुमङ्गला, ऋषभनन्दिनी भरतेश्वरजी की वहेनड़ी बालकुमारी ब्राह्मी, सुमङ्गला सुता बाहुबलीजी की वहेनडी साध्या प्रथम आर्या सुन्दरी, माता वजिया, मातासिध्यारथा, माता मङ्गला, माता सुयशा सती तारामती, सती कौशिल्या, सती सीताजी, जैसी आदर्श आदर्श महिलाये होगई हैं महा समर के वादमे अनेक ऐतिहासिक चरित्रपुरुष, महिलाये होगई हैं जो इतिहास के पन्ने खोलने से मालूम होगा यों तो जो कुछ ज्ञान हुआ है वह आगे लिखा जायगा—

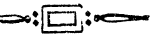

पुण्यनगरी के पांच नाम।

पूर्व काल से लेकर वर्तमान काल तक इस नगरी के पाच नाम होगये हैं।

१— इन्द्र पुरी, २— विनीता नगरी, ३— साकेतपुर, ४— कौशिल्या नगरी, ५— अयोध्याजी,

यौंतो प्राकृतमे ओज्झा पालीमे ओयुटो, और विशाखा, भी कहा जाता है

श्रीअयोध्या का ऐतिहासिक दृष्टि से वर्णन।

श्रीअयोध्याजीका इतिहास (सूर्यवंशी इक्ष्वाकु कुल)

श्रीअयोध्याजी मृत्युलोककी अमरापुरी थी जिसको स्वायं भुवमनु-मानवेन्द्रेण के लिये इन्द्रमहाराज के हुक्म से कुबेर जी ने १२ योजन चौड़ी-९ योजन लम्बी बनवाया था उत्तर सरहद श्रावस्ती, जहांगंडकी राप्ती, सिरणी का प्रवाह था मध्य में त्रिवेणी, शारदा, सरयू, घाघरा, दक्षिण सरहद में गोमती कौशिकी के पास पुरीमताल पर त्रिवेणी संगम, गङ्गा, यमुना, सरस्वती था, पूर्व में गोरखपुर (कुसिया) नगरी पश्चिमसरहद में लखनऊ और कपिलापुरी तक था, जिसमें बनारस श्री अयोध्याजी का स्मशान घाट रहा इतनी बड़ी नगरी के जो सृष्टी की शिरोमणि थी जिसमें प्रथम राजा, प्रथम साधू प्रथम केवली, प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी ने वास किया था अमरावती से बढकर भूमण्डल पर कोई पुरी थी तो अयोध्या थी षट धर्मशास्त्रों में ग्रन्थों में उसको भूयसी की प्रशंसा की गई है भूधर-शिखर-समदेव निकेतन पुरी की शोभा चैत्य भूमि वरा रही थी जहां सात भौमिक कनकभवन विद्यमान थे जहां प्रथम आर्य साधु पुंडरीकजी, प्रथम आर्या साध्वी ब्राह्मी-प्रथम सिद्ध चक्रवर्ती भरत जैसे पूण्यपुरुष होगये। जिसभूमि में सगर चक्रवर्ती ने अनेक दिशाओं तथा देशान्तरों तक में

दिग्विजयकी थी-जहां दिलीप जैसे महाराजा ने यूनानतक सरहद बढ़ाया था। जहां पर राजा भगीरथजी ने अपनी प्रतिज्ञाके बल पर आकाश गङ्गा को हिमालय से पृथ्वी पर आरोहण किया था और इसी भूमिपर आदर्श रामचन्द्रजी ने रामराज्य स्थापन किया था तब तक अयोध्या जी अमरापुरी सम रही।

अयोध्या पर विपत्ति।

—o:o—

श्रीरामचन्द्रजी की रामलीला सम्वरण के बाद ही अयोध्यापर विपत्ति आई कौशलराज्य के दो भाग हुये। श्रीरामचन्द्रजी के ज्येष्ठपुत्र कुशजी ने अपनी राजधानी कुशभवनपुर (कौशाम्बी) बनाई जो अयोध्या से दक्षिण में २० कोसकी दूरी पर गोमती के किनारे बनाई और कनिष्ठपुत्र लवजी ने अपनी राजधानी अयोध्या से उत्तर नैपाल की तराई में राप्ती और सिरगी नदी के बीच में श्रावस्ती नगरी बनाई जो तुषारन और नैमिषारण्य तक विस्तृत थी कुछ काल बाद इस अयोध्या मे कोई राज्य कर्ता न रहा राजा के बिना राजधानी कैसी? अयोध्या थोड़े ही दिनों पीछे आपसे आप श्री हीन होगई अयोध्या के दुर्दशा के समाचार सुनकर महाराज कुश फिर अयोध्या आये और

कोशाम्बि ब्राह्मणों को दान देदी तब से महाभारत तक बराबर सूर्यवंशी (इक्ष्वाकुओं) की राजधानी रही जिनमे ६३ राजा महाभारत के पहिले होगये ई- सन् पूर्व १६०० वर्ष मे महासमर मे वाणावली अर्जुन के पुत्र कुमारअभिमन्यु के हाथ से अयोध्या का सूर्यवंशी राजा बृहद्बल मारा गया इसके बाद इस नगरी की ऐसी तबाही आई कि अयोध्या बिलकुल उजड़ गई सूर्यकुल अन्धकार मे लीन होगया इसके बाद सूर्यकुल वंशी ३१ राजा रहे जिस वक्त का राज्य कारोबार डामाडोल रहा ।

शिशुनाकवंशी राजा ।

ई- सनपूर्व शिशुवंश का ६ वा राजा नन्दिवर्धन जैन धर्मी रहा

बौद्ध और जैन धर्म की प्रवृत्ती ।

ई- सन् पूर्व ६०० के अरसे मे शाक्यसिंह का जन्म कपिलवस्तु (हालवस्ती) मे हुवा जिनने शाक्त संप्रदाय वालों का सामना कर "अहिंसा परमोधर्म" "अरिहंत" धर्म की घोषणा की- स्थापनाकी जिनका दूसरा नाम

भगवान सिद्धार्थ बुद्धदेव थे श्रावस्ती मे रहे और साधु हुये अयोध्या [ओयुद्धो] विशाषा मे १६ साल चतुर्मास करके सूत्रोंकी रचनाकी धर्मोपदेश किया और कुशीनगर मे (कुसिया गोरखपुर के पास मे) निर्वाण को प्राप्त हुये तब से कुछ अयोध्या का पता चलता है और बौद्धों के समय अयोध्या अच्छी रही।

इ० सन् पूर्व ५९७ में साम्प्रतकाल में चर्मतीर्थ ङ्कर भगवान श्रीमहावीर स्वामी कुण्ड ग्राम में जन्म लिया दिक्षालेकर जैन धर्म का "अरिहंत" धर्म का सिद्धांत समझाकर 'अहिंसा परमो धर्म' का झंडा सारेभारतवर्ष मे फहराया श्रीमहावीर प्रभुने १२ वर्ष छद्मस्थ अवस्थामें विहार कर गांव के वाहर चैत्य के पास ऋजु वालुका नदीके तटपर श्यामक गृहपती के क्षेत्र मे शालवृक्ष के नीचे वैसाष शुक्ल १० हस्त उत्तरा नक्षत्र मे कैवल्य ज्ञान हुवा -- इस वक्त और भगवान पार्श्वनाथ के वक्त उत्तर प्रान्त मे जैन धर्म अच्छा चला और श्रीअयोध्याजी में (लब्धी शास्त्री) गौतम गणधर स्वामी ये शास्त्रों- सूत्रों की रचना स्वर्गद्वारी के श्रीआदिश्वरजी के चैत्यालय में बैठकर किया था उस वक्त अयोध्या अच्छी रही श्रीमहावीरप्रभु और भगवान बुद्धके समय में अयोध्या छोड़कर अवन्ती नगरी उत्तर कौशलदेश की राजधानी रही उपर्युक्त शहरों में श्रीमहावी

२५प्रभु ये असंख्य धार्मिक प्रवचनकर अनेक मुमुक्षुओं को सन्मार्गपर लाये, थे इनसब शहरों मे जैसे बुद्ध भगवानके अनुयायी थे वैसे ही जैन श्रावक और श्राविकायें भी अगणित थी—

इति द्वितीय सर्ग ।

तृतीयसर्ग।

नन्दवंश।

ऐतिहासिक काल।

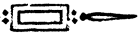

शिशुनाक वंश के राजाओं का राज्यकाल

इ० स० पूर्व ४६५ में शिशुनाक वंश का ९ वा राजा नन्दीवर्धन बौद्धधर्म अंगीकार कर श्रीअयोध्याजी में मणी-पर्वत पर एक स्तूप और मन्दिर बनवाया था।

इ० स० पूर्व ४६३ से४२० पूर्व तक में शिशुनाक वंश का १० वा राजा हानन्द जिसने राज्य क्रान्ति की और इक्ष्वाकु वंश का ८ क्षत्रिय राजा को (महासमर के बाद का ३१ वा) सुमित्रको मारकर अयोध्या की राजगद्दी पर से सूर्यवंशियों का नाश कराया उसके बाद के राजा महापद्म नन्दने पाटलीपुर (पटना) मगध में राज्य

कायम कर इ० स० पूर्व ४२२ में नन्दवंश चलाया जो राजा बौद्ध और जैनधर्म पालता था इस राज्य काल में ३६ वर्ष तक अयोध्या को कोई सम्हालने वाला न रहा नन्द राजा के भद्र वक्त में राजग्रहीनगरी में इ० स० पूर्व ६७० की श्रीअरिहंत की प्रतिमा स्थापनकर चैत्यालय बनवाया था और नन्द राजा के प्रधान शकाडल के पुत्र ने जैनधर्म अंगीकार कर श्रीस्थूलिभद्र स्वामी हुये इ० स० पूर्व ४०० जिन ने जैनधर्म का प्रचार किया।

मौर्यकुल वंशी गुप्त राज्य काल।

इ० स० पूर्व ३२२ में कौटिल्य चाणक्य ब्राह्मण के हाथ से नन्द वंश का नाश हुआ पाटलीपुर मगध देश की गद्दी पर प्रथम राजा चन्द्रगुप्त आरूढ हुये आप के समय अलेकझण्डर आया था और सिकन्दर युनानी राजा के साथ लड़ाई में सन्धि करली और सोल्युकस नाम का एलची भारतकी राज्य सभा में दाखिल किया आपने सोल्युकस की बहिन के साथ ब्याह करके एशिया खण्ड का समस्त हिन्दुवों का साथ छुड़ा हुआ सम्बन्ध फिरसे जोड़लिया आप के पुत्र बिन्दुसार भद्रसार ने मण्डलेश्वरोंसे लड़ाईको और आपके बाद गद्दापर बैठे

इ-स-पूर्व २९८ से २७३ तक में विक्रमादित्य ने राज्य किया। आपका नाम दूसरा चन्द्रगुप्त आपके राज्यकाल में अच्छे विद्वान कवि राज्यदरबार में रहे, आप समस्त एशिया पर विजय किया था और आपके साथ महा कवि कालिदास सब जगह घूमे थे, तक्षशिला नगरीका राजा कनिष्क जो क्षत्रप शाक्यकुल का रहा जिसने अपने नाम का सम्वत् चलाया था और पश्चिम भारत एशिया-देशपर आधिपत्य रहा आपके वक्त के बहुत कुछ शिलालेखसिक्के मिलते हैं। जिसमें से मथुरा की श्रीमहावीरजी की प्रतिमा पर का लेख है। जिसका राज्य-काल ई-स- पूर्व-२१६ का है।

"सिद्धं महाराजा कनिष्कस्य राज्ये सम्वत्सरे नवमो ९॥"

चन्द्रगुप्तदूसरे ने कनिष्क राजा को जीतकर उज्जैनीका राजा विक्रमको जीतकर और श्रावस्ती नगरी के राजाको जीतकर, उत्तर कौशल की राजधानी श्रावस्ती में से राज्य छोडकर अयोध्यामें अपना राज्य कायम किया उजडी हुई अयोध्याका उद्धार किया और आपने सम्वत् चालूकर विक्रमादित्य नाम धारण किया आपके वक्त में प्रथम श्रीरामचन्द्रजी का जन्मस्थान पर बडा भारी मन्दिर बनवाया जिसका द्वार पूरा कसोटी काला सङ्गमरमर पत्थर का रहा दूसरा मन्दिर श्री आदिश्वर जी का दीक्षाकल्याणक वाला बनवाया जो हाल में मौजूद है और तीसरा कनकभवन बनवाया और दूसरे

अनेक मन्दिर बनवाकर अयोध्या आबाद किया। आपके राज्यकाल में चीनी यात्री फाह्यान भारत भ्रमण को आये थे जिसका वृत्तांत जेम्स लेग साहब ने "फाह्यान की यात्रा" नामक पुस्तक में लिखा है आपने जैन, बौद्ध, शैव धर्मपर समान प्रेम रक्खा था।

ईस-पूर्व-२७३ से २३७ तक आपके उत्तराधिकारी महाराज अशोक हुए आपने बौद्धधर्म अङ्गीकार कर अरिहन्तको प्रतिमायें स्थापनकर बहुत से चैत्यालय, बौद्धमठ, शिलालेख स्तूप कीर्तिस्तम्भ बनवाये आपका बनवाया हुआ-प्रथम स्थान श्री आदिश्वरजी का मन्दिर, स्वर्गद्वारी पर था और २००फीट ऊंचा कीर्तिस्तम्भबनवाया रहा और आपके समयमें भारतवर्ष में एशिया खण्ड में चीन, जापान, तिब्बत मंगोलिया बर्मा, सिलोन मलायावो, देशोंपर बौद्धधर्म का प्रचार किया आप धर्म प्रेमी रहे २०० फीट ऊंचा कीर्तिस्तम्भ स्वर्गद्वारी पर बनवाया था।

आपके बाद महाराज कुणाल (दशरथ-बन्धु पालित) हुये और आपनी सौतीली मां के कारण देश वटा लेना पड़ा बड़ी कठिनाइयां उठाई और माता का हुक्म सुनकर आंख फोड़ देना पड़ा आखोर घूमते २ उज्जैनी के राजा की लड़की

के साथ व्याहकर दिया आपसे जो पुत्र हुआ वो उज्जैन की गद्दी पर बैठा जिसका नाम था अंगत-या-इन्द्रपालीत-संप्रति

इ-स-पूर्व २२१ से २२२ पूर्व तक महाराजा सम्प्रती दादा के साथ लड़ाई कर पाटलिपुत्र की गद्दीपर बैठे आपने उज्जैनीनगर मध्ये जैनाचार्य श्री आर्य सुहस्तीसूरिजी के प्रति बौद्धसे जैनधर्म अङ्गीकार किया आपने अयोध्या में प्रथम श्री आदिश्वरजी का दिक्षा कल्याणवाला मन्दिर बनवाया हालमें आपके वक्तकी प्रतिमायें मौजूद हैं, आपने व्रत लिया था कि रोज एक मन्दिर में जैन प्रतिमा स्थापन कर श्रवण करके दतून करते आपने सवालक्ष जैन मन्दिर, सवा करोड़ नवीन प्रतिमायें भराई ३६ हजार जीर्णोद्धार किये ४५ हजार धातु प्रतिमायें भराई १लक्षदान शालायें बनवाई जैनधर्म का शासन धर्म की प्रचार के खातिर काबुल ग्रीकदेश पर्यंत उपदेशक भेजे, बहुत से परधर्मी महान सागर सम जैन आर्य शासन में मिल गये आर्य जैन संस्कृतीका प्रवाह इतना बढ़ाके सारा एशिया खण्ड में जैन शासन झण्डा फहराने लग गयो उसवक्त का आर्यावर्त का एक एक बच्चा अपने को "अहिंसा परमोधर्मः" कहने में गौरव समझता था आर्यावर्त के कोने कोने में जैनधर्म की वीरहाक सुनाई पडती थी मगर क्या ? प्रति पक्षियों से ये कुछ सहन न हो सका !?

गुप्तवंशियोंका मगधमें से टूटना साधुओंका विहार

सुशांग वंशका जोर जुल्म- कलिङ्गपती का- युनानी का धावा।

इ० स० पूर्व १८५ में मौर्यवंशी ६ मां राजा ब्रहद्रथ का सेनापती पुष्पमित्र अपने स्वामी को कमजोर समझ कर दगा से मारकर मौर्य वंशियों को भगाकर पाटलीपुत्र की गद्दी पर जबरदस्ती से बैठ गया राज्य में गड़बड़ी पड़ गई धर्म में धक्का पहुंचा साधु महाराजाओं को विहार में दुःख होने लगा पुष्पमित्र कट्टर सनातनी रहा उसके साथ में पाणिनी नाम का आचार्य रहा जिसकी सहायता से प्रथम वार बौद्धोंको सताया पूर्व मगध से लेकर पश्चिम जालन्धर तक मेसे बहुत से बौद्ध मठ जला दिये बौद्ध भिक्षु मार डाले गये और अयोध्या में २ +अश्वमेध यज्ञ किया जिसका वर्णन "मालविकाग्निमित्र नाटक में आयो है

+"पुष्पमित्रं याजयामः"। --पतञ्जलि सूत्र

"अरुणद् यवनः साकेतम्"। —पतञ्जलि सूत्र

अयोध्या का इतिहास पृष्ट १०६—

जिस नाटक का नायक अग्निमित्र पुष्यमित्र का लडका रहा जिसका जिक्र काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका में दिया है उस समय जैनधर्म पर धक्का जरूर लगा है विहार में बाधायें जरूर पड़ी हैं पुष्पमित्र ने सारा मगध पर अपना अधिकार जमालिया उत्तर कौशल राज्य के जो राजायें रहे वो अपने मंडलेश्वर खण्डियें बनायें गये मगर कोई भी धर्म पर प्रहार करने वाला का दौर ज्यादा दिन टिक नहीं सकता।

इ० स. पूर्व १६५ में कलिङ्गपति × 'खारवेल' का आक्रमण हुआ उस लड़ाई में पुष्पमित्र भागकर मथुरा में जाकर छिप गया उस अरसे मे इ. स. पूर्व ६०० की राज यही तीर्थ में स्थापित श्रीअरिहंतकी प्रतिमो वचाकर अपने साथ लेकर लड़ाई शान्त होने पर पाटलीपुत्र में राज्या रोहण के साथ भुवनेश्वर के निकट प्राची नदी के तटपर उदयगिरि (कुमारीगिरि) की हाथी गुफा में एक प्रासाद

× "भारत भूमि और उसके निवासी" पृष्ट १८- में श्रीजयचन्द्र विद्यालङ्कार- रोयल एशियाटीक सोसाइटी कलकत्ता- विहार, ओड़सा की रीचर्स सोसाइटी का जनरल का तृतीय विभाग चतुर्थ संख्या- पृष्ठ ४३५-५०७ में आर्कोलोजिकल आफइण्डिया एन्युअल रिपोर्ट सन् १९०२,३ प्रचीन जैनलेख संग्रह भाग १-उपोद्घात पृष्ट ३८ (गुजराती)

बनवा कर "नन्द राजा केतुभद्रकी स्थापित प्रतिमा चैत्यालय में स्थापित की। अरिहंत मन्दिर बनवाया और गुफा में उत्कीर्ण कलिङ्गचक्रवर्ती राजो खारवेल के त्रयोदश वर्ष व्यापी राजत्व के विवरण वाला शिलालेख खुदवाया जो लिपि अर्धमागधी जैन प्राकृत लक्षणों से युक्त अपभ्रंश भाषा मे है। बाद में अपने को धोमराज, भिक्षुराज धर्मराज घोषित करना।

इ. स. पूर्व १५४ में युनानी राजा मीनान्दर भारत पर आक्रमण किया और पुष्पमित्र से मीनान्दर का कठोर युद्ध हुवा जिसमें युनानी राजा को अपने देश भागना पड़ा जिसका उल्लेख पतञ्जली ने अपने योग सूत्र में दिया है

इ-सनकी १ ली सदीमें गुप्तराजाये मगधदेशसे भाग कर मध्य प्रान्त मध्यभारत में होकर पश्चिमभारतमें आये और वहां के छोटे २ राज्यों को जीतकर बल्लभिपुर में राजधानी बनाया जो इ-स-१२० से ४१० तक राज्यचलाया। बिहार-मगध-पूर्व-उत्तरभारत के राज्योंमें गड़बड़ी पड गई धर्मों में आपस में झगडा हुआ प्रभु को प्रसन्न न हुआ कुदरती कोपहुआ विहार में १० दस सालका दुष्काल पडा बरसात बुन्द भर न आया बौद्ध जैन धर्मी राज्यकर्ताओं का भाग जाने से दुष्काल पडने से साधु विहार में बाधाये पड गई और

श्रमण संघमें गड़बड़ी पड़ गई इस वक्त धर्मधुरन्धर जीर्णोद्धारक तीर्थ रक्षक महाश्रुतधर श्री आर्यरक्षित सूरजी जैनधर्म की रक्षा के लिये खड़े हुये आपने शुरू में ४५ आगमों को ग्रन्थित किये और बहुतसा काम किया जो जैनधर्म का इतिहास में अमर नाम रक्खा है।

बादमें दुष्काल के वक्त साधु शिष्य समुदाय को लेकर एक बडे आचार्य खडे हुये जिनका नाम श्री आर्य वज्रस्वामी आपने शुरू में ही लम्बा विहार शुरू किया और प्रथम कलिङ्ग उडीसा के राजा को जैनी बना कर पुरीमें नेमीनाथजी की प्रतिमा स्थापन की और आगे विहार शुरू किया आपने श्री महान् श्रावक विद्यागामी श्रीवज्रस्वामीजी हुये आपको बाल्यावस्था में जाती स्मरण का ज्ञान हुआ आपने ओसवालवंश जैनी जावडशाके हाथ श्रीशत्रुंजय तीर्थ का उद्धार कराकर आप वहांसे रास्तेमें कइएक राजाओंको जैनधर्मी बना कर शिष्य समुदाय बड़ाकर द्राविड़देशमें जाकर वहां के बहुत राजाओं को जैनी बनाया आपके बाद श्रीरत्न प्रभा सूरिश्वरजी ने इ-स-१६५ में ओसियानगरी में ओसवालों को जैनी बनायें और पश्चिम भारत के कोने २ जैनधर्म का झंडा शुरू किया बाद में फिर वहां पर बौद्ध-जैनधर्म में झगड़ा पैदा हुआ इ-स-२५३ में श्रीमलवादी सूरिजी वलभिपुर की सभा मद्धे बौद्धों को शास्त्रार्थ करके हराया बाद फिर आगमों में सभा में गडबड़ी

पड़गई इस वक्त इ-स- ४५३ में वल्लभिपुर की धर्म सभा में जैन आगमों को श्रीदेवर्धि क्षमा श्रमणे उद्धार किया लिपीबद्ध-इस वीच में पांचसो वर्ष के राज्यकारोबार में अयोध्या पर बहुत विपत्ति आई कोई तीर्थ को-राज्यकारोवार को अच्छी तरह सभालने वाला न रहा क्षत्रिय राजा भाग जाने पर वैश्य-राज्य कर्ताओं का कारोवार चला और अयोध्या वैश्यों के हवाले गई।

इ-स-६०१ से ६४७ तक वैश्यराजा हर्षवर्धन का राज्य कन्नौज नगर में रहा अयोध्या का कारोवार अपने हस्तक रहा आपके वक्त में दूसरा चीनी यात्री ह्यानचांग भारत भ्रमण को आया था उसने अयोध्या का वृत्तांत कहण कथनी के साथ में लिखा है जब वो वल्लभिपुर में गया तब वहां पर का जैनधर्म के लिए अच्छा लिखा है वहां राजा वालादित्य था—

कुमारिलभट्ट और श्रीमच्छङ्कराचार्य

इ-स-५९१ से ६५५ तक में कुमारिलभट्ट नामका ब्राह्मण प्रथम बौद्ध भिक्षुवनकर अभ्यास कर धर्म छोडकर अपने गुरु बौद्धों से शास्त्रार्थ कर हराया और उसने बौद्धधर्म का बहुत खण्डन किया और वैदिकमत का पुनः स्वीकार-संस्कार कराकर भट्टपाद की उपाधि से अलंकृत किया आपने मीमांस दर्शन पर वार्तिक भाष्य लिखा आपके दो वड़े शिष्य रहे जिन

का नाम था प्रसिद्ध मीमांसक प्रभाकर, और मुरारी मिश्र

इ-स-६११में केरल मलवार देशमें चिदम्बरम् ग्राम मद्धे श्रीशङ्कराचार्य का जन्म हुआ आपके पांचवर्ष की कुमार बाल्यावस्था में पिता श्रीमरगये और आठ वर्ष की उमर में द्राविडदेश त्यागकर उत्तर दिशा प्रयाण किया कुमारिलभट्ट से शास्त्रार्थ हुआ और दोनों ने मिलकर बौद्ध-जैनधर्म पर कुठाराघात शुरू किया। ×

—:o:—

(चैत्यवासी यती महाराज)

श्रीवास्तव कायस्थ राज्यकर्ता *

इ-स- की सातवीं शताब्दी सारा भारतवर्ष में धर्म परिवर्तन-राज परिवर्तन की शताब्दी कही जाती है जहां देखो

× अवधगेझेटीयर वोल्युम-१-पेज ३-अयोध्या का इतिहास। रायले एशियाटिक सोसाइटी जनरल १२-पृष्ठ७ -रासमाला पृष्ठ ५४ गीता रहस्य-धर्मयोग-तिलक महाराज कृत।

* अवधगेझेटियर वोल्युम-१-पृष्ठ ६०७ अयोध्या का इतिहास पृष्ठ ११५—

वहां राज्य के लिये मारा मारी में आचार्यों में धर्मग्रन्थों में मारा मारी परिवर्तनमें सब कुछ हो गया, उस वक्त अपनी अयोध्या उत्तराखण्ड की अजोड भूमि हो रही थी साधु-शिष्य समुदाय को लेकर विहार कर गये श्रावक श्रमण संघ में धर्म परिवर्तन होने लग गया जहां बहुत श्रावक रहे वो बदल गये और जहां नहीं थे वहां नये हो गये ऐसे वक्त में तीर्थों को सम्भालने वाला न रहा कल्याणक की पवित्र भूमियों को कोई बचाने वाला भी न रहा तब ई-स-६४७ से ११०० तक में श्रीवास्तव कायस्थ राज्यकर्ता रहे आये अयोध्या पर राज्य अमल चलाया आप सब जैनी रहे आप शाकाहारी थे और संध्याको भोजन करते नहीं आपके वंशजों में से इ-स-११४२में इलाहाबाद जिले के गढ़वाग्राम में और एक मेहवड में श्री सिद्धेश्वरजी का मन्दिर श्रीवास्तव जैनियों ने बनवाया था जिसका शिला लेख हाल इलाहाबाद अजायबघर में है आप सब राज्यकर्ताओं ने जैनधर्म का अच्छा रक्षण किया अयोध्या का मन्दिर का कारोबार आपके पास था—

ऐसे मौके पर धर्म का तीर्थभूमिका सम्हालनेवाला न रहा सब कोईके चले जाने पर भी चैत्यवासी यतीवर्य महाराजाओं ने चैत्यवासी सूरिश्वरों ने धर्मका रक्षण किया आदर्श महात्माओं ने प्राणांत कष्टों को सहन कर जैनशासन की धर्म ध्वजा विस्तीर्ण प्रदेश में फहराया इन पुण्य

श्लोक जगद्वंद महर्षियों ने अद्यापि पर्यंत प्रभुका त्रिकालाबाधित अविकारी शासनको अविच्छिन्न परम्परायेटकावीरक्षा धन्य हो ! ऐसे परम योग निष्ठ शासनप्रेमी महात्माओं को

इ० स० १०३० में महमूदगजनवी के भांजे सैयदसालार इस देश पर चढआया उसने प्रथम मुस्लिम सिपाही ने श्रीअयोध्या पर वार किया- बाद में श्रावस्ती गया वहां पर जैनी राजा सुहेलदेव के हाथ से बहरायच में मारागया वहां पर आप की कबर बनी हुई है।

ई० स० ११९५ महम्मदगोरी भारत पर चढाई कर आया और हिन्दू राजा पृथ्वीराज को मारकर दिल्ली की गद्दी पर आरूढ हुआ आप के साथ में आप का भाई मखदूमशाहगोरी आया था इसने अयोध्या में आकर स्वर्ग द्वारवाला श्रीआदिश्वरजी का जन्मस्थान का मन्दिर, वा सम्राट अशोक का बनवाया हुआ कीर्तिस्थम्भ-बौद्धमठ और चैत्यालय को नष्ट कर दिया और उस जगह पर मसजिद वो मकबरा बनवाया जो हाल में शाहजूरनका टीला के नाम से मशहूर है उस जगह वीरान टीला और मकबरें टूटीफूटी मौजूद है। टीला के अर्ध भाग में फिर से इ० स० ७८१ में नवाव शुजाउद्दौला के खजाञ्ची सेठ केसरिसिंह अग्रवाल दिल्ली वाले ने नवाव के हुक्म से

बनवाया और चरण स्थापित किये यहां पर लिखने की जरूरत है कि शाह एक छोटी सी सेना लेकर इस तरफ आया और सनातनियों की कोई हानि न पहुंची और जैन धर्म पर इस का वार क्यों हुआ ? जिसका कारण यही मिलता है कि जैन लोगों को सनातन धर्मियों से कुछ सहायता न मिली और हिन्दू जो जैन मन्दिर का घण्टा सुनना पातक समझते थे वो लोग जैन मन्दिर नष्ट होने पर खुश हुये

इ० स० १५२६ में बाबर ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई दो वर्ष बाद अयोध्या मे ई० स० १५२८ मे खास श्रीरामचन्द्रजी का जन्मस्थान (जिसको महाराज विक्रमादित्य ने बनवाया था) वो तोडकर मसिजद बनवाई जो खंभे कसोटी के थे जिसमे से दो खम्भे फाटक पर लगे हैं दो दिल्ली लेगये दो अजायबघर फैजाबाद में हैं दो वशिष्ट कुण्ड सड़कको पूर्व कबरिस्तानमें उजडे पडे हैं ÷

इ० स० १७३१ मे दिल्ली के बादशाह ने नये मन्दिर मसजिदें बनवाया तब से लखनऊ की नवाबी शुरू हुई और नवाब शुजाउद्दौला ने उसे परिवर्धित कर फल

÷ अवध गेझेटिय वोलयुम १- पृष्ट १३- अयोध्या काइतिहास पृष्ट १४६ फारसी ग्रन्थ दरवीहस्त—

पाया मन्सूरअलीखां के समय मे अवधकी राजधानी फैजाबाद हुई अयोध्या की राजेश्वरी लोप होगई मन्दिरों के स्थान पर मसजिद बनवाई और मुसल्मानों के लिये अयोध्या करबला हुई मकानों की जगह कबरों ने वास किया अयोध्या का स्वरूपही बदूल गया बाद मे इ० स० १८०० में शाकलद्वीपीय ब्राह्मण राजा के राज्य काल में अयोध्या आये सो आज तक आपके राज्यवंशिओं के पास है और आपके साथ सरकार बहादुर ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के राज्य में सब प्रजा सुख चैन से आबाद है—

चौथा सर्ग ।

वर्तमान काल ।

इस तीर्थ को श्रीआदीश्वरजी से लेकर आजतक में जिस महाराजाओं ने बनवाया है उसका प्रमाण बता चुके हैं और एक बताता हूं इस समोवशरण को—

अरिहापण नमे तीर्थनेरे समवसरण नाभूप— जहां
सकलाद्ध जिन मन्दिरारे जिन मण्डित पुर ग्राम ।
सवा कोडी जिनबिंबनेरे भरावे सम्पतिराय
ज्ञान भण्डार एकवीश कर्यारे कुमार नरेन्द्र शुभठाय

"१—भरत २—सागरलेन ३—महापद्म ४—हरीषेण ५—सम्प्रति ६—कुमारपाल ७—* वस्तुपाल"

मुसल्मानी राज्यकाल में बहुत सम्वेगी साधु आचार्यों ने तीर्थों के रक्षणार्थ शाही हुक्म निकाले दिल्ली के बादशाहों को शिष्य बनाया जिसमें श्री हीर विजय सूरिश्वरजी, श्रीजीन चन्द्र सुरिश्वरजी, श्रीजीनदत्त सुरिश्वरजी और श्री जीनकुशल चन्द्र सुरिश्वरजी मुख्य हैं आप सुरिश्वरोंकी तरफ से तीर्थोंका रक्षण हुआ तो जरूर है मगर जो काम चैत्यवासियों ने किया था वैसा उत्तर भारत के तीर्थों के लिये किसी ने नहीं किया जिसमें इ-स-१८२० वी-सं-१८७७ में काशीनिवासी बृहद् खरतर गच्छीभट्टारक श्रीजीन लाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्रीहीरधर्म सूरिजी तच्छिष्य श्री वृहद् खरतर गणीय पाठक श्रीकुशलचन्द्र सूरिजीके उपदेश से जयपुनिवासी ओसवाल वंशीय शेहगोत्रिय श्रीहुकमीचन्दजी तत्पुत्र श्रीउदयचन्द्र तथा बीकानेर निवासी ओसवालवंशीय वडेर गोत्रीय सामन्त सिंहजी के वरद हस्ते इस तीर्थ का पुनरोद्धार हुआ और उत्तराखण्ड की भूमि पर अनेक पाखण्डियों को हराकर बनारस के रामघाट का पुराना

* १— सगरचक्रवर्ती २— महापद्मनन्द जिसने नन्द वंश चलाया ३—वीशस्थानक पूज्य पद—

मन्दिर परा पूर्व की चैत्यवासी सूरिश्वरों की गद्दी, भेलुपुर, भदैनी, चन्द्पुरी, सिंहपुरी, रत्नपुरी और अयोध्या तीर्थ का रत्तण के लिये महासमर्थ प्रयत्न किये, और आपके बाद मंडला चार्य बालचन्द्रजी के पटशिष्य दिग्मण्डलाचार्य श्री नेमचन्द्र सूरिजी ने पूर्व गद्दीधर आचार्य सुरिश्वरों का कारोवार सम्भाल कर तीर्थ रक्षण के लिये कार्य शुरू किया।

इ-स-१८७७ में शेठजी माधवलाल दुगड कलकत्ता वाले को कार्यभार सौंप दिया था जो दस साल के बाद कुछ अव्यवस्थ कारोवार रहा बादमें श्रीनेमचन्द्र महाराजे कलकत्ता वाले सेठजी लाभचन्द मोतीचन्दजी से लिखापढ़ी करके मिरजापुर निवासी मेमर्स धनसुखदास जैठमल फार्म के मालिक आनरेरी मजिस्ट्रेट वाबू मिश्रीलाल जी रेंदानी को सोंप्रत किया जो हाल में तीर्थ के ट्रस्टी महाशय के कारोबार में मन्दिर और धर्मशाला हैं।

—::*::o::*::—।

बौद्ध ग्रन्थो में अयोध्या तीर्थ।

इण्डियन प्रेस प्रकाशित "ह्नुयोनचांग" का प्रवास वर्णन परसे उद्घृत पृ० ३४४ गार्डन आफइण्डिया पृ० ६४, ६५ बुद्धीष्टइण्डिया परसे उद्घृत—

अयोध्या को पाली- प्राकृतभाषामें "ओयुटो" कहते हैं और बौद्ध ग्रन्थ में विशाषा लिखा गया है। प्रारम्भिक बौद्ध कालीन इतिहास में विशाषा देवी का नाम बहुत प्रसिद्ध है राज ग्रहीनगरी का धनी धनञ्जय की बेटी का नाम विशाषा था जिसका व्याह श्रावस्ती नगरी के राजा पूर्णवर्धन के साथ किया था जिसने प्रथम बौद्ध धर्म ग्रहणकर प्रथम आर्या बनीथी और बुद्धदेव के लिये एक बड़ाभारी मठ श्रावस्ती में बनाया था जिसका नाम प्राकृत "पुष्पाराम मातृ प्रासाद" लिखा है विशाषा ने अयोध्या में भी एक मठ बुद्धदेव के लिये बनवाया था जिसके नाम पर से अयोध्या को बौद्धधर्मी विशाषा कहने लगे बुद्धदेवे विशाषा में १६ पर्व तक चतुर्मास किये थे और धर्म के सिद्धान्त- सूत्र बनाये थे जिस सूत्रों को "अञ्जन वाग" में बैठ कर सुनाये थे अवदान का प्रमाण देकर लिखा है कि अञ्जन- बुद्ध देव के नाना थे जिस के नाम पर से अञ्जन वाग नाम रक्खा था।

प्रवास वर्णन में लिखा है कि अयोध्या में १०० सङ्घाराम और ३०० साधु रहते थे जो हीनयान औम्र महायान दोनों सम्प्रदाय वाले पुस्तक अभ्यास करते थे नगर में ३६० जैन अरिहन्त के मन्दिर- पर पौसाला- ३०० यतीमहा राज और लाखों श्रावक श्रमण संघ निवास करते थे और

कोई दस देव मन्दिर है जिनमें अनेक सम्प्रदायी निवास करते हैं। राजधानी में एक प्राचीन संघाराम हैं जिसमें भगवान बुद्धदेव ने वास कर सूत्र बनाये थे और जहां पर वसुबन्धु बोधीसत्व ने कईवर्ष के कठिन परिश्रम से अनेक शास्त्र हीनयान-महायान दोनों सम्प्रदाय विषयक निर्माण किये थे अनेक देश के राजाये वडे आदमी के श्रमणों के लिये उपकार के निमित्त धर्मोपदेश किया था।

नगर के उत्तर सरयू किनारे पर बडा संघाराम है जिसके भीतर अशोक राजा वनाया हुआ एक वड़ा स्तूप २०० फीट ऊंचा है यह वह स्थान है जहां पर तथागत भगवान ने देव समाज के उपकार के लिये तीन मास तक धर्म के उत्तमोत्तम सिद्धांतों का उपदेश किया था जहां पर भगवान आदिश्वरजीका जन्म हुआ था जिस पर बडा जैन मंदिर है उसके पास मे ही एक स्थान है जिसको उपाश्रय कहते हैं जहां पर लब्धी शास्त्री ये सौत्रान्तिक सम्प्रदाय सम्बन्धी शास्त्र का निर्माण किया था (ये वोही गौतमलब्धी शास्त्री जी है जो भगवान चर्म तीर्थंकर के प्रथम गणधर हुये थे और जैनधर्म के ग्रन्थों को निर्माण किये थे)

नगर के दक्षिण-पश्चिम में सडक पर बाईं ओर एक बडा संघाराम और चैत्यालय-देवाश्रम है जहां पर असंख्य

घोधी सत्वने अभ्यास किया था उसी स्थान में "अरहंतशीद् शिननल" नामक शास्त्र लिख कर इस बात का प्रतिपाद किया है कि व्यक्तिरुप में अर्हम कुछ नहीं है गोप अरह ने भी इस स्थान पर "शिङ्ग कियोइड शीलन" नामक ग्रन्थ को बना कर इस बात का प्रतिवाद किया है कि व्यक्ति विशेषरुप में अर्हम ही सब कुछ है —ये स्थान वोही है जहां पर हाल में पांच भगवान के ११ कल्याणक की पवित्र पादुकायें विराज मान है—

इ-स-१३०७ विक्रम सं-१३६४ मे श्री जिनप्रभा मुनिजी ये आश्विन सुदी अष्टमी के रोज श्रीअयोध्या जी में श्रीपर्युषणा कलप नियुक्ति पर टीका भाष्य लिखी थी जिसमें ६६ प्राकृत भाषा की गाथायें है।

इ-स-१८७५ में पं० मोहनलालजी तत्शिष्य पूरनचन्द जती श्रीपूज्य एक पुस्तक लिखी जिसमें प्राचीन स्तवन स्त्रोत्र स्मरण वीरहा जो लिखी प्रति हाल में अयोध्याजी कारखाना में रही जिस प्रति बाबू मि श्रीलालजी केपास में है।

—०:०—

प्राचीन प्रतिमायें।

मन्दिर के कल्याणक वाले पवित्र समोव सरणके चौतरा

में से भोंयरा में से निकली हुई प्राचीन दो प्रतिमायें है जिसमे से एक प्रतिमा पर लेख नहीं दिखाई पडता परन्तु प्रतिमायें कसोटी के पत्थर की है और पञ्चतीर्थी प्रतिमा है जिस प्रतिमा पर बहुत से प्राचीन चिन्ह है एक तो हस्तकमल में बिजौरा, लंगोट, और शिखा लंबी है और दो काउसग्गीया के हस्त बैठी प्रतिमा जैसा ध्यानास्थ दोनों मिले हुये और उस हस्त में भी बिजोरा बना हुवा है प्रतिमा अभिनन्दन भगवान की है दूसरी प्रतिमा श्री अरिहन्त जी की है जिस पर का एक बाजू का लेख मिटा हुआ है और एक बाजु पर लिखा है जिस प्रतिमा का लंछन क्या है ?

अयोध्या यां "सं० । १० पवादी संघ श्रमणस्य'; ये संवत् किस का है ? सम्राट कनिष्क का जो सम्वत् मथुरा की पुरानी प्रतिमा पर मालूम होता है वोई और उसके पहिले का है मगर सन १ ला चीनी यात्री फाह्यान जब अयोध्या आया तब यहां पर अरिहंत मन्दिर और प्रतिमा देखी थी ।

* तीर्थयात्रा *

श्री तीर्थङ्कर देवोंकी जन्मभूमि, दीक्षा भूमि, केवल ज्ञान भूमि, निर्वाणभूमि, विहार भूमि ये सर्व तीर्थ भूमि कही जाती है और छद्मस्थ अवस्थ में भगवान ने जहां पर भिक्षा लिया

हो वो भी तीर्थभूमि सब भूमि भव्य जीवों के शुभ भाव की प्राप्ति करानेवाली होने से संसार सागर से तारना रहे ये तीर्थों में सम्यग्दर्शन आदि की विशुद्धि के लिये तीर्थ की विधि पूर्वक यात्रा करनी चाहिये कल्याण के अर्थी आत्माओं के लिये ही तीर्थभूमि है वहां जाने से अपने को बहुत फल प्राप्त होता है अनेक धर्मी आत्माओं के दर्शन हो, पवित्र भूमि को स्पर्शना हो वहां पर श्रीमंताइ के धीमंताइ का उपयोग पाप क्रिया में न होवे ये सब भावना तीर्थ भूमि पैदा कर सकता है इस लिये भवोदधि में से तारनार होइ ये सब तीर्थ कहलाते हैं तीर्थ की विधि पूर्वक यात्रा करनी चाहिये।

तीर्थ महात्म ।

तीर्थ यात्रा महत्व ।

श्रीतीर्थङ्कर देव के आत्माओं ने तीर्थकी साधनाकी तीर्थ की स्थापना की तब आप तीर्थंकर बने और वही तीर्थ की सेवना करने से तीर्थपती बने हैं महात्माओं ने कहा है कि तीर्थपती की सेवा करने से तीर्थ सबकी सेवा का फल प्राप्त होता है यानी तीर्थ की सेवा में तीर्थङ्कर की सेवा आजाती है ।

धन्योहं मानुषं जन्म, सुलब्ध सफलं मम।
यद्वापि जिनेन्द्राणाम्, शासनं विश्व पावनं ॥
दानेन वर्धते कीर्तिं, लक्ष्मी पुण्येन वर्धते।
विनयेन पुनः विद्या, गुणः सर्वे विवेकताः ॥
श्री तीर्थ पांथ रजसा विरची भवन्ति।
तीर्थेषु वंभ्रमण तो न भवेष्व हन्ति ॥
द्रव्य व्ययादिह नराः स्थिर सम्पदः स्युः।
पूज्या भवन्ति जगदीश मथा च यन्तः ॥

हमारा जन्म सफल है क्यों कि हमको मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है और वोभी जम्बू द्वीप के भरतखण्ड में श्रेष्ठ कुल जो जैन है जिसको जैनशासन को अपनाया है जो धर्म विश्वव्यापी समझा जाता है।

दान से कीर्ति मिलती है, पुण्य से लक्ष्मी बढती है। विनय से विद्या प्राप्त होती ह विवेक से गुण मिलता है श्रीतीर्थ भूमि के रज स्पर्श से भव्यात्माओं रज रहित होते हैं तीर्थों में परिभ्रमण करने से भवमें भटकते नहीं (भव-भ्रमण से मुक्त होते हैं) ऐसे तीर्थों में दान देने से मनुष्य अचल लक्ष्मी वान होता है और विश्वपूज्य है।

पुन्नाकरणे पून्नं एगगुणं सयगुणं च पडिमाए।
जिण भवणेण सहस्सणंत गुणं पालणे होइ ॥

इस महान तीर्थराज के विषे पूजा करने से एक गुण पुन्य होता हैं जिन भुवन बनवाने से हजार गुना पुन्य होता हैं और तीर्थ का पालन करने से अनन्त गुणा पुन्य होता है।

काष्ठादीनां जिनावासे यावन्त परमाणवः।
तावन्ति वर्ष लक्षाणि तत्कर्ता स्वर्ग भाग् भवेत्॥

इस जिन मन्दिर विषे के काष्ट पाषाण में जितने प्रमाण मौजूद हैं उतने ही लक्ष वर्षप्रयन्त जिन मन्दिर बनवाला स्वर्ग लोक में शिववधुपरि बोधी सत्व को प्राप्त होता है इसलिये सुरिश्वरों ने कहा है।

श्रीतीरथ पद पूजो गुणिजन जेहथी तरिये ते तीरथरे।
अरिहन्त गणधर नियमा तीरथ चउवी संघ महा तीरथ रे॥

१— लौकिक अडसढ तीर्थने तजिये, लोकोत्तरने भजिये रे *।
लोकोत्तर द्रव्यभाव दुभेदे, थावर जङ्गम जजियेरे॥
पुष्प प्रदीपाक्षत धूप पुंगी, फलै जिनेन्द्र प्रतिमां प्रपूज्य।
ये लक्षशः श्रीपरमैष्टिमन्त्रं, जपन्ति ते तीर्थ कृतो भवन्ति॥

* १ अष्टषष्टिसु तीर्थेषु यात्रायां तत्फलं भवेत्।
आदिनाथस्य देवस्य स्मरणे नापितद्भवेत्॥ शिवपुराण॥

विशस्थानक पूजा मध्ये तीर्थ पदपूजा।

श्रीतीर्थङ्करो के पूज्य पाद कमलों सें जो भूमि पवित्र होती है तो तीर्थ कहलाती हैं। श्रेष्ठधर्म कीर्तियुक्त सत्ज्ञान आनन्द सहित सर्व दोषों को हरनार सुवर्ण सदृष्य कान्ति वाले देवेन्द्रों से वन्दित श्रीआदीश्वर देव से लेकर पांच भगवान के च्यवन, जन्म, दिक्षा, केवलय ज्ञान कल्याणक हुये वो धर्म में तीर्थ मे सर्व श्रेष्ठ सर्वोत्कृष्ट मनाये थे।

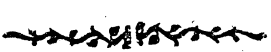

सकलतीरथनों राजियो कीजेतेहनी यात्र
जस दरिशणे दर्गतिटले निर्मलथाये गात्र

"जैनत्व वास्तविक परंपरा है, जो कि अन्य धर्मों से बिलकुल पृथक् एवं स्वतन्त्र है। और यही कारण कि तत्ववेत्ताओं के लिये अत्यन्त अध्ययनीय एवं प्राचीन भारतवर्ष की वस्तुस्थिति है।"——एच० जैकोबी

"सुन्दर सिद्धान्त हृदूगतभावों का पुनर्दिग्दर्शन हैं" —रस्किन।

अयोध्या का राज्यकाल।

तीर्थोद्धारक-आचार्य-राजायें।

इक्ष्वाकु वंशी राजा आदिकाल के राजा।

१-श्री आदिश्वर ऋषभ देवजी, स्वायंभुमनु।
२-भरत चक्रवर्ती सिद्ध-प्रथम तीर्थ स्थापक।

३-बाहुवलीजी	४-सूर्ययशा राजा
५-श्रीयांसु कुमार	६-सगर चक्रवर्ती
७-भगीरथ जी	८-दिलीप कुमार
९-जित शत्रुराजा	१०-संवर राया
११-मेघराया	१२-सिंहसेनराया
१३-राजा हरिश्चन्द्र	१४-राजारघु
१५-राजा दशरथ,	१६-राजा रामचन्द्र
१७-अनन्तवीर्यराजा	१८-राजा चन्द्रवतंस

१९-राजा बृहद्दल-महासमरतक-
इ-स-१९०० वर्ष पूर्व में ९३ राजा हुये।

पौराणिक काल।

महाभारत के बाद में ११ राजा हुये
इक्ष्वाकुवंशी राजा सुमित्र-

इ-स-पूर्व ६०० के अरसे में बुद्धदेव

इ-स-पूर्व-५२७ श्रीवर्धमानजी २४-में चरम के तीर्थंकर

इ-स-पूर्व-५२७ श्रीगौतमगणधर स्वामी

इ-स-पूर्व-५०० केतुभद्र राजा

(अयोध्या-राजग्रही में तीर्थ स्थापक)

—शिशुनागवंश

इ-स-पूर्व-४६५-नन्दीवर्धन बौद्ध राजा

इ-स-पूर्व-४६३ से इ स-पूर्व ४२० तक में

महापद्मनन्द-नन्दवं स्थापक जैनी

गुप्त मौर्यवंश—

१-इ-स-पूर्व-३२२—चन्द्रगुप्त—

इस के राज्यकाल में सिकन्दर भारत पर आया सोल्युकस एलची प्रथम भारत सभा में दाखिल हुआ

इ-स-पूर्व-३११.राजा कनिष्क श-क-

इ-स.पूर्व.२१८-विक्रमादित्य २ गुप्तचन्द्र

इ-स-पूर्व-२१५-प्रथम-चीनी यात्री साधु काह्यान का भारत भ्रमण।

इ स-पूर्व-२७३—सम्राट अशोक—बौद्ध

इ-स-पूर्व-२३७-बन्धुपालीत—कुणाल

इ० स० पूर्व २२९ इन्द्रपालीत- या सम्प्रति जैन, धर्मोद्धारक, तीर्थोद्धारक-स्थापक।

इ० स० पूर्व १८५- मौर्यवंशी राजा बृहद्रथ सेनापति पुष्पमित्र के हाथ मारा गया।

इ० स० पूर्व १६५- कलिङ्गपति खारवेल (भुवनेश्वर निकट हाथी गुफा के चैत्यालय में अरिहन्त की प्रतिमा स्थापक

इ० स०- पूर्व १५४ युनानी राजा मीनान्डर पुष्पमित्र से युद्ध- और पातञ्जली आचार्य के हाथ अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ कर सनातन धर्म का उद्धारक।

इ० स० १२० से ४१० तक में गुप्त राजाओं के मध्य- पश्चिम भारत पर आक्रमण वल्लभिपुर में राज्यारोहण किया

इ० स० १६५- उत्तर पूर्व भारत में दुष्काल।

इ० स० ६०१ से ६४७ तक में वैश्य राजा।

इ० स० ६४७ से ११०० तक मे कायस्थ राजा।

इ० स० १०३२ से सैयद सालार का श्रीअयोध्या पर आक्रमण।

इ० स०- ११९५ मखदूमशागोरी का अयोध्या आक्रमण जैन मन्दिर तोड़ना (श्रीआदीश्वर जन्मस्थान स्वर्गद्वार)

इ० स० १५२८ बाबर का आक्रमण अयोध्या श्रीरामचन्द्रजी का मन्दिर तोड़ना मसजिद बनवाना—

इ० स० १५०७ मे श्रीजिनप्रभा मुनीजी पर्युषणा कल्प नियुक्त पर भाष्य टीका किया जिसमे ६६- प्राकृत भाष्य गाथा थे।

इ० १६३१- मे गोस्वामीजीये तुलसीकृत रामयण रचो

इ० स० १७१३- में सादतखां लखनऊ पञ्जाब अवध का नवाब हुवा।

इ० स० १८०० में शाकद्वीपीय ब्राह्मण राजा अयोध्या राजगद्दी पर—

अयोध्या का वर्णन तीर्थ कल्प में।

श्री जिनप्रभासूरि कृत "तीर्थ कल्प" नामक ग्रन्थ में श्री अयोध्याजी तीर्थ के लिये जो लिखा है, सो नीचे दिया जाता है। विक्रम की चौदवीं शताब्दी में विद्यमान थे जैन वृत्त के पृष्ठ ६५ में आपको श्री महावीर तीर्थङ्कर के ७५ वीं पाठ पर विराजमान लिखे हैं।

अउज्झा, एगट्ठिआए जहा, अउज्झा, कोशला, विणीआ, साकेथं, इक्खागु भूमि रामपूरि कोशलत्ति एसा सिरिउसभ, अजिअ, अभिनन्दन, सूमइ अणंत, जिणाणं, तहां नवस्म श्रीसीवीर गणहर अचल भाडणो जन्मभूमि जाय अट्ठ भरहव सुहागोलस्स मझ भूआ सया—

नव जोयण वित्थीणा बारस जोयण दीहाय

जत्थ चक्केश्वरी रयण मयायणट्ठि अपडीमा संघ विग्घंहरेइ गौमुहजवरक्खोअ।

जत्थ गग्घर दहो सरयु नइए सममीलीत्ता सग्गदुवारं तिप सिद्धीमावन्नो।

अयोध्याजीको आचार्यजी पांच नाम बताते है अयोध्या विनीता, कौशलया साकेत पुर जहां कोशलपती रामकी पुरी भी थी जहां पर जैन तीर्थङ्कर प्रथम रूषभदेवजी, अजीतनाथ अभिनन्दन सुमतिनाथ, अनन्तनाथ है १६ कल्याणक हुये है जहां पर महावीर स्वामी के नवमें गणधर अचलजी का जन्म हुआ था ऐसी अजोड़भूमि बारा योजन चौड़ी नव योजन लम्बी थी जहां पर देवी चक्केसरी यक्ष गौमुखान श्रमण संघ का विघ्न हरते है याने रक्षा करते है जहां पर गागरा, सरजु नदी का संगम स्वर्गद्वारी पर होता है ऐसी प्रसिद्ध नगरी अयोध्याजी जैन धर्म की पवित्र भूमि है।

कल्याणक १६ का स्तवन ।

विनीता नगरी है सारी, विनीत जन वास स्थिरकारी।
तीहां हुआ पंच महाराजा, तेणे से तीर्थ है ताजा ॥१॥
आदिजीन, अजित अभिनन्दन, सूमति अनन्त जगमण्डन ।
इन्हों का ओगणीस जाणो, कल्याणक भाई तुम्हीं मानो ॥२॥
पंच प्रभु पंचमी दीजे, गती गुणी लोक जीमरीझे।
दयालु विश्वना छोजी शरीणीने शरण दयो जी ॥ ३ ॥
करूं क्या प्रार्थना आजे पोते तुम्हें तारवा काजे।
प्रवर्त्या छो प्रभु मेरा कर्मों का गढ तुम्हें घेरा ॥ ४ ॥
जीनेश्वर देव के नन्दन, आवे इहां संघ लेइ वन्दन।
सुधारे धोल के मन्दर, करावे हंस ज्युं सुन्दर ॥५॥

समाप्त

पुस्तक मिलने का पता—

पं० जेष्ठाराम शर्मा, मुनीम

जैन श्वेताम्बर मन्दिर, अयोध्या।